साहित्य अकादमी के राष्ट्रीय सम्मेलन में कुलपति प्रो. बल्देव भाई शर्मा का व्याख्यान

रायपुर (विश्व परिवार)। कुशाभाऊ ठाकरे पत्रकारिता एवं जनसंचार विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. बल्देव भाई शर्मा को आज़ादी के अमृत महोत्सव के अवसर पर साहित्य और भारत छोड़ो आंदोलन विषय पर साहित्य अकादमी द्वारा मुम्बई में आयोजित साहित्य के राष्ट्रीय सम्मेलन में मुख्य वक्ता के रूप में आमंत्रित किया गया।

स्वतंत्रता आंदोलन में साहित्यकारों और पत्रकारों ने भी निभाई प्रमुख भूमिका

इस अवसर पर प्रो. शर्मा ने कहा कि स्वतंत्रता हमें बातों से नहीं मिली है। स्वतंत्रता के लिए हमारी पीढ़ियों ने संघर्ष किया है। भारत का इतिहास गुलामी का इतिहास नहीं है, भारत का इतिहास सतत संघर्ष का इतिहास रहा है। उस दौर में साहित्यकारों एवं पत्रकारों ने एक-एक शब्द को अग्नि बनाकर सृजित किया था। उसी साहित्य ने भारतीय जनमानस में स्वाधीनता की चेतना का संचार किया। आज हमें हमारी आत्मिक चेतना को नई पीढ़ी को संचारित करने की आवश्यकता है। प्रो. शर्मा ने कहा कि यह गर्व एवं आनंद का विषय है कि साहित्य अकादमी द्वारा आज़ादी का अमृत महोत्सव ऐसे स्थान पर मनाया जा रहा है जो स्थान स्वतंत्रता आंदोलन का साक्षी रहा है। उन्होंने कहा कि स्वतंत्रता आंदोलन में साहित्यकारों और पत्रकारों ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। साहित्य अकादमी द्वारा मुम्बई में आयोजित दो दिवसीय राष्ट्रीय सम्मेलन में देशभर के प्रमुख साहित्यकार शामिल हुए। 75 वें स्वतंत्रता दिवस के अवसर देशभर में आजादी का अमृत महोत्सव मनाया जा रहा है। इसी कड़ी में साहित्य अकादमी द्वारा यह कार्यक्रम आयोजित किया गया।

समापन साहित्य अकादेमी द्वारा आयोजित अमृत महोत्सव सम्मेलन

साहित्य और भारत छोड़ो आंदोलन विषयक दो दिवसीय सम्मेलन का समापन

वैभव न्यूज ■ नई दिल्ली

साहित्य अकादेमी की ओर से आजादी के अमृत महोत्सव के अवसर पर दरबार हॉल, एशियाटिक सोसायटी, मुंबई में आयोजित साहित्य और भारत छोड़ो आंदोलन विषयक दो दिवसीय सम्मेलन का सोमवार को समापन हो गया। आज का प्रथम सत्र, देशभक्तिपूर्ण साहित्य, अवधारणा, प्रवृत्ति तथा सौंदर्यशास्त्र विषय पर केंद्रित था। जिसके अध्यक्षीय वक्तव्य में मराठी के सुप्रसिद्ध लेखक. आलोचक सदानंद मोरे ने भारत छोड़ो आंदोलन और मराठी समाज और साहित्य पर विस्तार से अपने विचार व्यक्त किए। उन्होंने अपने वक्तव्य में मराठी साहित्य में स्वाधीनता आंदोलन के समय में उपजी विभिन्न वैचारिक

धाराओं को भी रेखांकित किया। सिंधी साहित्यकार एवं आलोचक विनोद आसुदाणी ने सिंधी में देशभक्तिपूर्ण साहित्य के बारे अपने विचार व्यक्त करते हुए कहा कि स्वतंत्रता से पूर्व सिंधी साहित्य पर गांधीवाद का व्यापक प्रभाव रहा है। उन्होंने अपने संबोधन में स्वतंत्रता आंदोलन के संदर्भ एवं संघर्ष की पृष्ठभूमि पर सिंधी में लिखे गए उपन्यासों का भी उल्लेख किया। तमिल के विख्यात लेखक, विद्वान मालन वी. नारायणन ने कहा कि भारत छोड़ो आंदोलन ब्रिटिश सत्ता के विरुद्ध अंतिम आंदोलन था। जिसमें भारत के आमजन की सक्रियता के साथ साथ साहित्यकारों एवं पत्रकारों की महत्वपूर्ण भूमिका थी। उन्होंने कहा कि आजादी के लिए संघर्ष का यह कालखंड तमिल उपन्यासों में प्रमुखता से रेखांकित हुआ है। सम्मिलन के समापन सत्र की अध्यक्षता तेलुगु लेखिका एवं आलोचक सी. मृणालिनी ने की। उन्होंने तेलुगु साहित्य का भारत छोड़ो आंदोलन में योगदान विषय पर अपने विचार भी साझा किए।

पंजाबी लेखक.नाटककार सतीश कुमार वर्मा ने पंजाबी का भारत छोड़ो आंदोलन में योगदान विषय पर अपने वक्तव्य में कहा कि स्वाधीनता आंदोलन में पंजाब की महत्वपूर्ण भूमिका रही है।

साहित्य

आजादी से पहले के सिंधी साहित्य पर गांधीवाद की छाया : विनोद आसुदाणी

-आजादी के अमृत महोत्सव पर साहित्य अकादमी के दो दिवसीय सम्मेलन का समापन

नई दिल्ली, 09 अगस्त (हि.स.)। साहित्य अकादमी के तत्वावधान में आजादी के अमृत महोत्सव पर मुंबई में आयोजित "साहित्य और भारत छोड़ो आंदोलन" विषयक दो दिवसीय सम्मेलन का सोमवार को समापन हो गया। आज का प्रथम सत्र "देशभक्तिपूर्ण साहित्य : अवधारणा, प्रवृत्ति तथा सौंदर्यशास्त्र" विषय पर केंद्रित रहा। अध्यक्षीय वक्तव्य में मराठी के सुप्रसिद्ध लेखक सदानंद मोरे ने भारत छोड़ो आंदोलन और मराठी समाज एवं साहित्य पर विस्तार से विचार व्यक्त किए। उन्होंने मराठी साहित्य में स्वाधीनता आंदोलन के समय में उपजी विभिन्न वैचारिक धाराओं को रेखांकित किया।

मुंबई के एशियाटिक सोसायटी के दरबार हॉल में आयोजित सम्मेलन में सिंधी साहित्यकार एवं आलोचक विनोद आसुदाणी ने कहा कि स्वतंत्रता से पूर्व सिंधी साहित्य पर गांधीवाद का व्यापक प्रभाव रहा है। उन्होंने स्वतंत्रता आंदोलन के संदर्भ एवं संघर्ष की पृष्ठभूमि पर सिंधी में लिखे गए उपन्यासों का भी उल्लेख किया। तमिल के विख्यात लेखक मालन वी. नारायणन ने कहा कि भारत छोड़ो आंदोलन ब्रिटिश सत्ता के विरुद्ध अंतिम आंदोलन था, जिसमें भारत के आमजन की सक्रियता के साथ-साथ साहित्यकारों एवं पत्रकारों की महत्वपूर्ण भूमिका रही। आजादी के लिए संघर्ष का यह कालखंड तमिल उपन्यासों में प्रमुखता से रेखांकित हुआ है।

सम्मेलन के समापन सत्र की अध्यक्षता तेलुगु लेखिका एवं आलोचक सी. मृणालिनी ने की। उन्होंने तेलुगु साहित्य का भारत छोड़ो आंदोलन में योगदान विषय पर विचार साझा किए। पंजाबी लेखक एवं नाटककार सतीश कुमार वर्मा ने "पंजाबी का भारत छोड़ो आंदोलन में योगदान" विषय पर अपने वक्तव्य में कहा कि स्वाधीनता आंदोलन में पंजाब की महत्वपूर्ण भूमिका रही है। पंजाबी लोक साहित्य और कविता के उस दौर में संघर्ष के तत्व तो दिखाई देते ही हैं, साथ ही आंदोलन के लिए जोश और होश का समन्वय भी दिखाई देता है।

ई.विजयलक्ष्मी ने "मणिपुरी का भारत छोड़ो आंदोलन में योगदान" विषय पर आलेख पढ़ा। हिंदी लेखक एवं आलोचक करुणाशंकर उपाध्याय ने "देशभक्तिपूर्ण साहित्य : अवधारणा, प्रवृत्ति तथा सौंदर्यशास्त्र" विषय पर कहा कि स्वाधीनता आंदोलन के दौरान न केवल हिंदी बल्कि अन्य भारतीय भाषाओं में देशभक्तिपूर्ण साहित्य का विपुल सृजन हुआ। उन्होंने कहा कि हमारे देश में सांस्कृतिक, भौगोलिक एवं भाषिक विविधता है, लेकिन उसमें एकता की अंतर्धारा भी समाहित है। उन्होंने इस मौके पर हिंदी के प्रमुख कवियों की देशभक्तिपूर्ण कविताओं का भी उल्लेख किया। इस अवसर पर साहित्य अकादमी के सचिव के. श्रीनिवासराव सहित अनेक साहित्य-संस्कृति प्रेमी श्रोता मौजूद रहे।

हिन्दुस्थान समाचार/ पवन कुमार अरविंद/मुकुंद

एशियटिक सोसायटी सोसायटी के दरबार हॉल में 'साहित्य और भारत छोड़ो आंदोलन' विषयक द्वि-द्विवसीय सम्मेलन आयोजित किया गया। उद्घाटन सत्र में साहित्य अकादमी के सचिव के.श्रीनिवासराव ने भारत छोड़ो आंदोलन की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि और भारतीय भाषाओं के साहित्यिक योगदान को रेखांकित किया। बल्देव भाई शर्मा, गौरहरि दास, सितांशु यशश्चंद्र ने भी विचार रखे। उद्घाटन वक्तव्य का वाचन साहित्य अकादमी के उपसचिव कृष्णा किंबहुने ने किया। अध्यक्षता विश्वास पाटील ने की। उषा ठक्कर ने और बी. रंगराव ने आलेख का पाठ किया।

पीढ़ियों के संघर्ष ने भारत को आजादी दिलाई: शर्मा

रायपुर | साहित्य अकादमी ने "आजादी के अमृत महोत्सव' के मौके पर "साहित्य और भारत छोड़ो आंदोलन" विषय पर साहित्य सम्मेलन का आयोजन किया। कुशाभाऊ ठाकरे पत्रकारिता एवं जनसंचार विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. बल्देव भाई शर्मा इसमें मुख्य वक्ता के रूप में शामिल हुए। उन्होंने कहा कि स्वतंत्रता हमें बातों से नहीं मिली है। स्वतंत्रता के लिए हमारी पीढ़ियों ने संघर्ष किया है। भारत का इतिहास गुलामी का इतिहास नहीं है] भारत का इतिहास सतत संघर्ष का इतिहास रहा है। उस दौर में साहित्यकारों एवं पत्रकारों ने एक-एक शब्द को अग्नि बनाकर सृजित किया था। उसी साहित्य ने भारतीय जनमानस में स्वाधीनता की चेतना का संचार किया। आज हमें हमारी आत्मिक चेतना को नई पीढ़ी को संचारित करने की आवश्यकता है। साहित्य अकादमी द्वारा मुम्बई में आयोजित दो दिवसीय राष्ट्रीय सम्मेलन में देशभर के प्रमुख साहित्यकार शामिल हुए।

BBN 24 NEWS
बिग ब्रेकिंग न्यूज

साहित्य अकादमी के राष्ट्रीय सम्मेलन में कुलपति प्रो. बल्देव भाई शर्मा का व्याख्यान स्वतंत्रता आंदोलन में साहित्यकारों और पत्रकारों ने भी निभाई प्रमुख भूमिका

रायपुर 10 अगस्त, 2021 कुशाभाऊ ठाकरे पत्रकारिता एवं जनसंचार विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. बल्देव भाई शर्मा को "आजादी के अमृत महोत्सव" के अवसर पर "साहित्य और भारत छोड़ो आंदोलन" विषय पर साहित्य अकादमी द्वारा मुम्बई में आयोजित साहित्य के राष्ट्रीय सम्मेलन में मुख्य वक्ता के रूप में आमंत्रित किया गया। इस अवसर पर प्रो. शर्मा ने कहा कि स्वतंत्रता हमें बातों से नहीं मिली है। स्वतंत्रता के लिए हमारी पीढ़ियों ने संघर्ष किया है। भारत का इतिहास गुलामी का इतिहास नहीं है, भारत का इतिहास सतत संघर्ष का इतिहास रहा है। उस दौर में साहित्यकारों एवं पत्रकारों ने एक-एक शब्द को अग्नि बनाकर सृजित किया था। उसी साहित्य ने भारतीय जनमानस में स्वाधीनता की चेतना का संचार किया। आज हमें हमारी आत्मिक चेतना को नई पीढ़ी को संचारित करने की आवश्यकता है। प्रो. शर्मा ने कहा कि यह गर्व एवं आनंद का विषय है कि साहित्य अकादमी द्वारा आज़ादी का अमृत महोत्सव ऐसे स्थान पर मनाया जा रहा है जो स्थान स्वतंत्रता आंदोलन का साक्षी रहा है। उन्होंने कहा कि स्वतंत्रता आंदोलन में साहित्यकारों और पत्रकारों ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। साहित्य अकादमी द्वारा मुम्बई में आयोजित दो दिवसीय राष्ट्रीय सम्मेलन में देशभर के प्रमुख साहित्यकार शामिल हुए। 75 वें स्वतंत्रता दिवस के अवसर देशभर में आजादी का अमृत महोत्सव मनाया जा रहा है। इसी कड़ी में साहित्य अकादमी द्वारा यह कार्यक्रम आयोजित किया गया।

The New Dunia.com
पल-पल की खबर पर तिरछी नजर
समाचार पत्र और मीडिया है लोकतंत्र के प्राण, इसके बिन हो जाता है देश निष्प्राण।

Chhattishgarh Editorial State

स्वतंत्रता आंदोलन में साहित्यकारों और पत्रकारों ने भी निभाई प्रमुख भूमिका

1 min read

15 hours ago thenewdunia

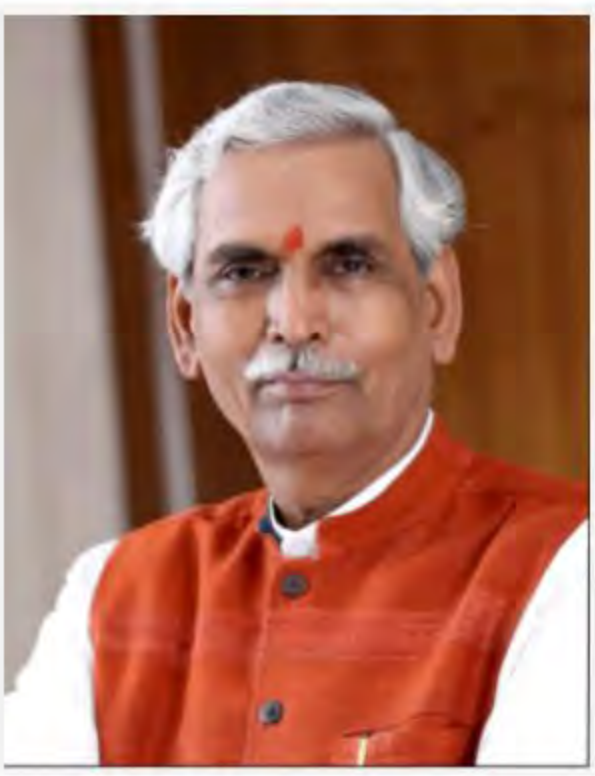

- **साहित्य अकादमी के राष्ट्रीय सम्मेलन में कुलपति प्रो. बल्देव भाई शर्मा का व्याख्यान**

दिनांक 10 अगस्त, 2021। कुशाभाऊ ठाकरे पत्रकारिता एवं जनसंचार विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. बल्देव भाई शर्मा को "आज़ादी के अमृत महोत्सव" के अवसर पर "साहित्य और भारत छोड़ो आंदोलन" विषय पर साहित्य अकादमी द्वारा मुम्बई में आयोजित साहित्य के राष्ट्रीय सम्मेलन में मुख्य वक्ता के रूप में आमंत्रित किया गया। इस अवसर पर प्रो. शर्मा ने कहा कि स्वतंत्रता हमें बातों से नहीं मिली है। स्वतंत्रता के लिए हमारी पीढ़ियों ने संघर्ष किया है।

"

भारत का इतिहास गुलामी का इतिहास नहीं है, भारत का इतिहास सतत संघर्ष का इतिहास रहा है। उस दौर में साहित्यकारों एवं पत्रकारों ने एक-एक शब्द को अग्नि बनाकर सृजित किया था। उसी साहित्य ने भारतीय जनमानस में स्वाधीनता की चेतना का संचार किया। आज हमें हमारी आत्मिक चेतना को नई पीढ़ी को संचारित करने की आवश्यकता है। प्रो. शर्मा ने कहा कि यह गर्व एवं आनंद का विषय है कि साहित्य अकादमी द्वारा आज़ादी का अमृत महोत्सव ऐसे स्थान पर मनाया जा रहा है जो स्थान स्वतंत्रता आंदोलन का साक्षी रहा है। उन्होंने कहा कि स्वतंत्रता आंदोलन में साहित्यकारों और पत्रकारों ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है।

साहित्य अकादमी द्वारा मुम्बई में आयोजित दो दिवसीय राष्ट्रीय सम्मेलन में देशभर के प्रमुख साहित्यकार शामिल हुए। 75 वें स्वतंत्रता दिवस के अवसर देशभर में आजादी का अमृत महोत्सव मनाया जा रहा है। इसी कड़ी में साहित्य अकादमी द्वारा यह कार्यक्रम आयोजित किया गया।

Mynews36.com
|| News That Matter ||

साहित्य अकादमी के राष्ट्रीय सम्मेलन में कुलपति प्रो. बल्देव भाई शर्मा का व्याख्यान

Last Updated Aug 10, 2021 — 0

छत्तीसगढ़ देश दुनिया बड़ी खबर

स्वतंत्रता आंदोलन में साहित्यकारों और पत्रकारों ने भी निभाई प्रमुख भूमिका

रायपुर MyNews36 – कुशाभाऊ ठाकरे पत्रकारिता एवं जनसंचार विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. बल्देव भाई शर्मा को "आज़ादी के अमृत महोत्सव" के अवसर पर "साहित्य और भारत छोड़ो आंदोलन" विषय पर साहित्य अकादमी द्वारा मुम्बई में आयोजित साहित्य के राष्ट्रीय सम्मेलन में मुख्य वक्ता के रूप में आमंत्रित किया गया।

इस अवसर पर प्रो. शर्मा ने कहा कि स्वतंत्रता हमें बातों से नहीं मिली है। स्वतंत्रता के लिए हमारी पीढ़ियों ने संघर्ष किया है।भारत का इतिहास गुलामी का इतिहास नहीं है,भारत का इतिहास सतत संघर्ष का इतिहास रहा है। उस दौर में साहित्यकारों एवं पत्रकारों ने एक-एक शब्द को अग्नि बनाकर सृजित किया था।उसी साहित्य ने भारतीय जनमानस में स्वाधीनता की चेतना का संचार किया।आज हमें हमारी आत्मिक चेतना को नई पीढ़ी को संचारित करने की आवश्यकता है।

प्रो. शर्मा ने कहा कि यह गर्व एवं आनंद का विषय है कि साहित्य अकादमी द्वारा आज़ादी का अमृत महोत्सव ऐसे स्थान पर मनाया जा रहा है जो स्थान स्वतंत्रता आंदोलन का साक्षी रहा है।

उन्होंने कहा कि स्वतंत्रता आंदोलन में साहित्यकारों और पत्रकारों ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है।साहित्य अकादमी द्वारा मुम्बई में आयोजित दो दिवसीय राष्ट्रीय सम्मेलन में देशभर के प्रमुख साहित्यकार शामिल हुए। 75 वें स्वतंत्रता दिवस के अवसर देशभर में आजादी का अमृत महोत्सव मनाया जा रहा है।इसी कड़ी में साहित्य अकादमी द्वारा यह कार्यक्रम आयोजित किया गया।

स्वतंत्रता आंदोलन में पत्रकारों ने भी निभाई प्रमुख भूमिका

पत्रिका न्यूज नेटवर्क
patrika.com

रायपुर. कुशाभाऊ ठाकरे पत्रकारिता एवं जनसंचार विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. बल्देव भाई शर्मा को 'आजादी के अमृत महोत्सव' के अवसर पर 'साहित्य और भारत छोड़ो आंदोलन' विषय पर साहित्य अकादमी द्वारा मुम्बई में आयोजित साहित्य के राष्ट्रीय सम्मेलन में मुख्य वक्ता के रूप में आमंत्रित किया गया।

इस अवसर पर प्रो. शर्मा ने कहा कि स्वतंत्रता हमें बातों से नहीं मिली है। स्वतंत्रता के लिए हमारी पीढ़ियों ने संघर्ष किया है। भारत का इतिहास गुलामी का इतिहास नहीं है, भारत का इतिहास सतत संघर्ष का इतिहास रहा है। उस दौर में साहित्यकारों एवं पत्रकारों ने एक-एक शब्द को अग्नि बनाकर सृजित किया था। उसी साहित्य ने भारतीय जनमानस में स्वाधीनता की चेतना का संचार किया। आज हमें हमारी आत्मिक चेतना को नई पीढ़ी को संचारित करने की आवश्यकता है।

आजादी अमृत महोत्सवः साहित्य अकादेमी में कार्यक्रम, भारत छोड़ो आंदोलन, गांधीवाद पर चर्चा

By अरविंद कुमार | Published: August 9, 2021 09:23 PM

मराठी के सुप्रसिद्ध लेखक-आलोचक सदानंद मोरे ने भारत छोड़ो आंदोलन और मराठी समाज और साहित्य पर विस्तार से अपने विचार व्यक्त किए।

भारत छोड़ो आंदोलन ब्रिटिश सत्ता के विरुद्ध अंतिम आंदोलन था।

Highlights

- स्वतंत्रता से पूर्व सिंधी साहित्य पर गांधीवाद का व्यापक प्रभाव रहा है।
- भारत के आमजन की सक्रियता के साथ साथ साहित्यकारों एवं पत्रकारों की महत्वपूर्ण भूमिका थी।
- आजादी के लिए संघर्ष का यह कालखंड तमिल उपन्यासों में प्रमुखता से रेखांकित हुआ है।

मुंबई: साहित्य अकादेमी की ओर से आज़ादी के अमृत महोत्सव के अवसर पर दरबार हॉल ,एशियाटिक सोसायटी,मुंबई में आयोजित " साहित्य और भारत छोड़ो आंदोलन " विषयक दो दिवसीय सम्मेलन का आज समापन हो गया।

आज का प्रथम सत्र " देशभक्तिपूर्ण साहित्य : अवधारणा,प्रवृत्ति तथा सौंदर्यशास्त्र "विषय पर केंद्रित था। जिसके अध्यक्षीय वक्तव्य में मराठी के सुप्रसिद्ध लेखक-आलोचक सदानंद मोरे ने भारत छोड़ो आंदोलन और मराठी समाज और साहित्य पर विस्तार से अपने विचार व्यक्त किए।

उन्होंने अपने वक्तव्य में मराठी साहित्य में स्वाधीनता आंदोलन के समय में उपजी विभिन्न वैचारिक धाराओं को भी रेखांकित किया। सिंधी साहित्यकार एवं आलोचक विनोद आसुदाणी ने सिंधी में देशभक्तिपूर्ण साहित्य के बारे अपने विचार व्यक्त करते हुए कहा कि स्वतंत्रता से पूर्व सिंधी साहित्य पर गांधीवाद का व्यापक प्रभाव रहा है।

उन्होंने अपने संबोधन में स्वतंत्रता आंदोलन के संदर्भ एवं संघर्ष की पृष्ठभूमि पर सिंधी में लिखे गए उपन्यासों का भी उल्लेख किया। तमिल के विख्यात लेखक -विद्वान मालन वी. नारायणन ने कहा कि भारत छोड़ो आंदोलन ब्रिटिश सत्ता के विरुद्ध अंतिम आंदोलन था। जिसमें भारत के आमजन की सक्रियता के साथ साथ साहित्यकारों एवं पत्रकारों की महत्वपूर्ण भूमिका थी।

उन्होंने कहा कि आजादी के लिए संघर्ष का यह कालखंड तमिल उपन्यासों में प्रमुखता से रेखांकित हुआ है। सम्मेलन के समापन सत्र की अध्यक्षता तेलुगु लेखिका एवं आलोचक सी. मृणालिनी ने की। उन्होंने तेलुगु साहित्य का भारत छोड़ो आंदोलन में योगदान विषय पर अपने विचार भी साझा किए।

पंजाबी लेखक -नाटककार सतीश कुमार वर्मा ने " पंजाबी का भारत छोड़ो आंदोलन में योगदान " विषय पर अपने वक्तव्य में कहा कि स्वाधीनता आंदोलन में पंजाब की महत्वपूर्ण भूमिका रही है। पंजाबी लोक साहित्य और कविता के उस दौर में संघर्ष के तत्व तो दिखाई देते ही है साथ ही आंदोलन के लिए जोश और होश का समन्वय भी दिखाई देता है।

ई.विजयलक्ष्मी ने " मणिपुरी का भारत छोड़ो आंदोलन में योगदान " विषय पर आलेख -पाठ किया। हिंदी लेखक एवं आलोचक करुणाशंकर उपाध्याय ने " देशभक्तिपूर्ण साहित्य : अवधारणा,प्रवृत्ति तथा सौंदर्यशास्त्र " विषय पर अपने संबोधन में कहा कि स्वाधीनता आंदोलन के दौरान न केवल हिंदी बल्कि अन्य भारतीय भाषाओं में देशभक्तिपूर्ण साहित्य का विपुल सृजन हुआ।

उन्होंने कहा कि हमारे देश में सांस्कृतिक ,भौगोलिक एवं भाषिक विविधता है लेकिन उसमें एकता की अंतर्धारा भी समाहित है। उन्होंने इस मौके पर हिंदी के प्रमुख कवियों की देशभक्तिपूर्ण कविताओं का भी उल्लेख किया। साहित्य अकादेमी के सचिव के. श्रीनिवासराव सहित अनेक साहित्य-संस्कृति प्रेमी श्रोता मौजूद रहें। कार्यक्रम का संयोजन साहित्य अकादेमी के उपसचिव कृष्णा किंबहुने ने किया।